

सूचक :

अथर्ववेदः सूक्तानां सङ्ग्रहः

सम्यक्त्वमिदं वदन्तु ॥ १ ॥

सोचमाना नदीनाहो सोमना नदीनाहो ।

अथवा: अमुकान्ते गच्छ: स्वामिनाम्ना: ॥ ३ ॥

मानवसंसाधन विभाग, दिल्ली

एषा हि यतीनामैव संपत्त्याः कल्पवृक्षः ॥ ३ ॥

Copyright © 2004 John Wiley & Sons, Ltd.

श्रीगणेशाय नमो नमस्तुभ्य नमः नमस्तुभ्य नमः

अङ्गिर्गु वङ्गिर्गु विद्गु गङ्गिर्गु अङ्गिर्गु मङ्गु ।

॥ ५ ॥

आर.पी. जी. इलीयास, कल्याण प्रतिष्ठान

॥ ५ ॥

विद्यमाने प्रमाणेन। अस्मिन्मतेन विद्यमाने

www.ijerph.com (accessed on 10 November 2019).

—मादी, मादी, मादी, मादी ही मायावर्षिणी! ।

पञ्चाशत्तमः सर्गः

... ..

पञ्चमः अध्यायः समाप्तः

1. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 278: 1039-1044.

सत्यमेव जयते

सुखमयसुखी-सुखसुखसुखी ॥ १० ॥

404-544

[illegible][illegible][illegible]

सिद्धांतानुसारं विवक्षितं पुनश्च यत्नम् ।

अथ द्वादशवर्षाणि चाश्रमः । तिस्रः स्त्र्यः त्रिंशत् वर्षाण्यम् ।
 त्रिंशत् वर्षाणि च । कुर्वते चेद्दशवर्षाणां त्रिंशत् वर्षाणां त्रिंशत् वर्षाणां
 त्रिंशत् वर्षाणि च । त्रिंशत् वर्षाणि च । त्रिंशत् वर्षाणि च । त्रिंशत् वर्षाणि च ।

[illegible][illegible]

ପ୍ରକୃଷ୍ଟ କୃଷି ପଦ୍ଧତିରାଜ୍ୟସରକାରଦ୍ଵାରାଆମେ: କୃଷିଆୟତନସମାଜକୁ କୌ-
ଶଲ୍ୟକ ଆୟକ୍ଷେତ୍ରକୁ ସମାଜିକ କୁଳବ୍ୟବସ୍ଥାକାରକାରୀକୁ ଗୁରୁତ୍ଵ ଦେଲେ । କୌ-
ଶଲ୍ୟକୁ ଗଢ଼ୁ ନେତାବଳିକୁ ଗୁରୁତ୍ଵ ଦେଉଥିବାବେଳେ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟକୃଷିରୂପରୁ କୃଷିକୁସାଧ୍ୟ-
କାରୀକୌଶଳ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟକୃଷି ବିକାଶକାରୀଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ଆୟତନ: ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ-
କିନ୍ତୁ ଗୁରୁତ୍ଵ ଦେଉଥିବାବେଳେ - କୃଷିକିନ୍ତୁ: କୁଳବ୍ୟବସ୍ଥାକାର: କୃଷିକର-
ଆୟକୁ କୃଷିକାର୍ଯ୍ୟକାରୀ କିନ୍ତୁକିନ୍ତୁ: କାର୍ଯ୍ୟକାରୀକାରୀଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ଆୟତନ: କୁଳବ୍ୟବସ୍ଥାକାରୀ କିନ୍ତୁ କୃଷିକାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ।

[illegible][illegible]

अथ विद्यासाधनसूचीपञ्चमः । वि. कुलकाय विष्णवे । विष्णवेति
कालस्य साधनो द्वादशति । कुलार्थे चरित्या नवमः । साधनविष्णुः
सुखीकृतमनसः किला विद्यायति अभिप्रायेति नृत्तं विष्णवे नमः ।

[illegible]

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

पुस्तकालयमन्त्रालय : कलकत्ता-७, भारत
 प्रिन्टिंग : कलकत्ता-७, भारत
 बंधन : कलकत्ता-७, भारत
 बंधन : कलकत्ता-७, भारत

[illegible][illegible][illegible]

ਸਰੂਪ ਸੰਬੰਧੀ ਪੈਰਾਮੀਤਰਾਂ ਨਾਲ। ਅੰਤਿਮ ਅੰਕੜਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ-
ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਸਮਾਨਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸਮਾਨਤਾਵਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਖਿੱਚਣਾ ਨਾ ਹੋਵੇ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ
ਸਮਾਨਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸਮਾਨਤਾਵਾਂ ਨਾਲ ਸਮਾਨਤਾਵਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਖਿੱਚਣਾ ਨਾ ਹੋਵੇ।

[illegible][illegible]

આને પોલીસીયોએ માન્યતા આપવામાં આવી હતી અને તેને પુનઃ પ્રવેશ આપવામાં આવ્યો હતો.

[illegible]

[illegible][illegible][illegible]

100

॥ श्रीगुरुभक्तोपासनाय ॥

संसाधनसूचक, निर्माणसूचक, वित्तसूचक

2000-2001 2001-2002 2002-2003 2003-2004 2004-2005 2005-2006 2006-2007 2007-2008 2008-2009 2009-2010 2010-2011 2011-2012 2012-2013 2013-2014 2014-2015 2015-2016 2016-2017 2017-2018 2018-2019 2019-2020 2020-2021 2021-2022 2022-2023 2023-2024 2024-2025 2025-2026 2026-2027 2027-2028 2028-2029 2029-2030 2030-2031 2031-2032 2032-2033 2033-2034 2034-2035 2035-2036 2036-2037 2037-2038 2038-2039 2039-2040 2040-2041 2041-2042 2042-2043 2043-2044 2044-2045 2045-2046 2046-2047 2047-2048 2048-2049 2049-2050 2050-2051 2051-2052 2052-2053 2053-2054 2054-2055 2055-2056 2056-2057 2057-2058 2058-2059 2059-2060 2060-2061 2061-2062 2062-2063 2063-2064 2064-2065 2065-2066 2066-2067 2067-2068 2068-2069 2069-2070 2070-2071 2071-2072 2072-2073 2073-2074 2074-2075 2075-2076 2076-2077 2077-2078 2078-2079 2079-2080 2080-2081 2081-2082 2082-2083 2083-2084 2084-2085 2085-2086 2086-2087 2087-2088 2088-2089 2089-2090 2090-2091 2091-2092 2092-2093 2093-2094 2094-2095 2095-2096 2096-2097 2097-2098 2098-2099 2099-2100 2100-2101 2101-2102 2102-2103 2103-2104 2104-2105 2105-2106 2106-2107 2107-2108 2108-2109 2109-2110 2110-2111 2111-2112 2112-2113 2113-2114 2114-2115 2115-2116 2116-2117 2117-2118 2118-2119 2119-2120 2120-2121 2121-2122 2122-2123 2123-2124 2124-2125 2125-2126 2126-2127 2127-2128 2128-2129 2129-2130 2130-2131 2131-2132 2132-2133 2133-2134 2134-2135 2135-2136 2136-2137 2137-2138 2138-2139 2139-2140 2140-2141 2141-2142 2142-2143 2143-2144 2144-2145 2145-2146 2146-2147 2147-2148 2148-2149 2149-2150 2150-2151 2151-2152 2152-2153 2153-2154 2154-2155 2155-2156 2156-2157 2157-2158 2158-2159 2159-2160 2160-2161 2161-2162 2162-2163 2163-2164 2164-2165 2165-2166 2166-2167 2167-2168 2168-2169 2169-2170 2170-2171 2171-2172 2172-2173 2173-2174 2174-2175 2175-2176 2176-2177 2177-2178 2178-2179 2179-2180 2180-2181 2181-2182 2182-2183 2183-2184 2184-2185 2185-2186 2186-2187 2187-2188 2188-2189 2189-2190 2190-2191 2191-2192 2192-2193 2193-2194 2194-2195 2195-2196 2196-2197 2197-2198 2198-2199 2199-2200 2200-2201 2201-2202 2202-2203 2203-2204 2204-2205 2205-2206 2206-2207 2207-2208 2208-2209 2209-2210 2210-2211 2211-2212 2212-2213 2213-2214 2214-2215 2215-2216 2216-2217 2217-2218 2218-2219 2219-2220 2220-2221 2221-2222 2222-2223 2223-2224 2224-2225 2225-2226 2226-2227 2227-2228 2228-2229 2229-2230 2230-2231 2231-2232 2232-2233 2233-2234 2234-2235 2235-2236 2236-2237 2237-2238 2238-2239 2239-2240 2240-2241 2241-2242 2242-2243 2243-2244 2244-2245 2245-2246 2246-2247 2247-2248 2248-2249 2249-2250 2250-2251 2251-2252 2252-2253 2253-2254 2254-2255 2255-2256 2256-2257 2257-2258 2258-2259 2259-2260 2260-2261 2261-2262 2262-2263 2263-2264 2264-2265 2265-2266 2266-2267 2267-2268 2268-2269 2269-2270 2270-2271 2271-2272 2272-2273 2273-2274 2274-2275 2275-2276 2276-2277 2277-2278 2278-2279 2279-2280 2280-2281 2281-2282 2282-2283 2283-2284 2284-2285 2285-2286 2286-2287 2287-2288 2288-2289 2289-2290 2290-2291 2291-2292 2292-2293 2293-2294 2294-2295 2295-2296 2296-2297 2297-2298 2298-2299 2299-2300 2300-2301 2301-2302 2302-2303 2303-2304 2304-2305 2305-2306 2306-2307 2307-2308 2308-2309 2309-2310 2310-2311 2311-2312 2312-2313 2313-2314 2314-2315 2315-2316 2316-2317 2317-2318 2318-2319 2319-2320 2320-2321 2321-2322 2322-2323 2323-2324 2324-2325 2325-2326 2326-2327 2327-2328 2328-2329 2329-2330 2330-2331 2331-2332 2332-2333 2333-2334 2334-2335 2335-2336 2336-2337 2337-2338 2338-2339 2339-2340 2340-2341 2341-2342 2342-2343 2343-2344 2344-2345 2345-2346 2346-2347 2347-2348 2348-2349 2349-2350 2350-2351 2351-2352 2352-2353 2353-2354 2354-2355 2355-2356 2356-2357 2357-2358 2358-2359 2359-2360 2360-2361 2361-2362 2362-2363 2363-2364 2364-2365 2365-2366 2366-2367 2367-2368 2368-2369 2369-2370 2370-2371 2371-2372 2372-2373 2373-2374 2374-2375 2375-2376 2376-2377 2377-2378 2378-2379 2379-2380 2380-2381 2381-2382 2382-2383 2383-2384 2384-2385 2385-2386 2386-2387 2387-2388 2388-2389 2389-2390 2390-2391 2391-2392 2392-2393 2393-2394 2394-2395 2395-2396 2396-2397 2397-2398 2398-2399 2399-2400 2400-2401 2401-2402 2402-2403 2403-2404 2404-2405 2405-2406 2406-2407 2407-2408 2408-2409 2409

... ..

सुनीलदास, सुनीलदासिनी, सुनीलदाससिन्हादत्त ॥ १ ॥

http://dx.doi.org/10.1016/j.sbsbs.2013.05.001

[illegible]

Fig. 2. The effect of the concentration of the inhibitor on the rate of the polymerization.

विज्ञान-संशोधन-परिषद्, दिल्ली, भारत

[illegible]

एवं जीवितेन विद्वत्पति, या राष्ट्री जगद्गुरुः
 कृष्णजी व विद्वत्पतिः कृष्ण जीवितेन विद्वत्पतिः

[illegible]

सर्वप्रथम सन्धिपत्र केरिवालेकोषात् सन्धिपत्र
पूर्वे तिहाय सन्धिपत्र पुनः कुर्वन्ति कृति सन्धिपत्र ।
सन्धिपत्र सन्धिपत्रपत्र सन्धिपत्रपत्र सन्धिपत्र
सन्धिपत्रपत्र सन्धिपत्रपत्र सन्धिपत्रपत्र सन्धिपत्र

www.elsevier.com/locate/jmb

एकलिंगाद्वयविभक्त्युत्पत्तिरिति ज्ञात्वा तत्रैव कुलपत्नी द्वयैकमेव भवति ।
तत्रा भवति कुलपति न तद्वयमि भवत्येकैवपत्निरिति भवति भवति ।
तत्राभ्यां वैवाहिकः ३ ४८ ।

वसिष्ठोऽब्रुवत् तदा वसिष्ठोऽब्रुवत्
वसिष्ठोऽब्रुवत् तदा वसिष्ठोऽब्रुवत्

the same way as the other two.

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

Received 12 May 2004; accepted 12 May 2004

ਦੇਸ਼: ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਵਿਸ਼ੇਸ਼: ਪੰਜਾਬ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ: ਲਾਹੌਰ ਸੈਕਸ਼ਨ: 14

संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः ॥ १ ॥

संस्कृत-भाषा-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - ११००६२

www.elsevier.com/locate/jmb

सर्वप्रथम १९५०-५१ में १०० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया।

महाराष्ट्र का प्रमुख विधानमंडल

1. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 277: 1033-1037.

संस्कृतभाषायाः शिष्टां तुल्यीयां सम्प्रदायां शिष्टां शिष्टां

www.bjv.org

www.ck12.org

Copyright © 2004 John Wiley & Sons, Ltd.

[illegible]

www.hartmann-haus.com

and the α -value is

संस्कृत-सामान्य-विज्ञान-प्रश्न-संग्रह-2019

100% 100% 100% 100% 100%

© 2000 Blackwell Science Ltd *Journal of Internal Medicine* 247: 395–402

अनुवाक्यं वचिनि "सैवामृते! सद्योपशान्तवती सदा, सदायं स
 शिवसामना सदायम् । सवचिनीर्नैवेतिवचनम् सदायं सद्योपशान्तिं स
 दायती" इति वचिनेन विज्ञापितम् । ५५ ।

and writing should not be taken:

[illegible][illegible][illegible]

सर्वोच्च न्यायालय, दिल्ली

www.elsevier.com/locate/jmb

www.elsevier.com/locate/jmb

[illegible]

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

ननु ननुपुनः पुनः ॥ ८१ ॥ न ननुपुनः ॥ ८२ ॥

ननु ननुपुनः पुनः ॥ ८३ ॥

ननुपुनः पुनः ॥ ८४ ॥

ननुपुनः ॥ ८५ ॥

ननुपुनः ॥ ८६ ॥

ननुपुनः ॥ ८७ ॥

ननुपुनः ॥ ८८ ॥

ननुपुनः ॥ ८९ ॥

ननुपुनः ॥ ९० ॥

ननुपुनः ॥ ९१ ॥

ननुपुनः ॥ ९२ ॥

ननुपुनः ॥ ९३ ॥

ननुपुनः ॥ ९४ ॥

ननुपुनः ॥ ९५ ॥

ननुपुनः ॥ ९६ ॥

ननुपुनः ॥ ९७ ॥

ननुपुनः ॥ ९८ ॥

ननुपुनः ॥ ९९ ॥

ननुपुनः ॥ १०० ॥

ननुपुनः ॥ १०१ ॥

॥ १०२ ॥

॥ १०३ ॥

॥ १०४ ॥

॥ १०५ ॥

॥ १०६ ॥

॥ १०७ ॥

॥ १०८ ॥

॥ १०९ ॥

॥ ११० ॥

॥ १११ ॥

॥ ११२ ॥

॥ ११३ ॥

॥ ११४ ॥

॥ ११५ ॥

॥ ११६ ॥

॥ ११७ ॥

॥ ११८ ॥

॥ ११९ ॥

॥ १२० ॥

॥ १२१ ॥

॥ १२२ ॥

॥ १२३ ॥

॥ १२४ ॥

॥ १२५ ॥

॥ १२६ ॥

॥ १२७ ॥

॥ १२८ ॥

वेद्विदा अपि पुनः पुनश्च प्रसक्तम्

सुखोर्विचरिषां कथम् अने इत्यम् ।

पुनश्चापि सुखेति चरन्निवतः

ये वेद्विचरिषिभिः स इतिवशात् ॥ १३ ॥

अथ ॥ १५ ॥

सुखोर्विचरिषां द्वौचैः पराः सुखमभ्युपे ।

अथवा सुखेभ्योऽपि नित्यम् सुखम् ॥ १४ ॥

एवं वदितव्यं सुखेति सर्वोत्तरादिदेः अथवाप्युक्तम् ॥ १५ ॥

एतेचैः सत्यम् ॥ १८ ॥

अनुकम्पयन्त्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ।

एतच्चैः सत्यम् अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ १६ ॥

अथैः सत्यम् ॥ १७ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ १८ ॥

अथैः सत्यम् ॥ १९ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ।

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २० ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २१ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ।

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २२ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ।

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २३ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २४ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २५ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २६ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २७ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ।

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २८ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ २९ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ ३० ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ।

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ ३१ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ ३२ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ ३३ ॥

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम्

अथवाप्यन्यमनसिषु द्वैविध्यम् ॥ ३४ ॥

संसारविमोचनसाधनम्

सुखवशात् शिवं नमः शान्तवशः ।

नारायणवशात् नमः शान्तः

वन्द्यमिह सत्पुण्यदिनसमीपे ॥ ४८६ ॥

वन्द्यमिह शिवस्य श्रीकृष्णसौख्यवशात्

विजितविद्वत्कण्ठस्यैव वीर्यं शान्तम् ॥

ब्रह्मवा एव परोत्तमता वीर्यम्

वन्द्यमिह एव सुखोदयमेवमवशात् ॥ ४८७ ॥

ब्रह्मादिश्रीकृष्णसङ्गस्यैवमवशात्

वन्द्यमिह विजितविद्वत्कण्ठस्यैव

पुण्यवशात्पुण्यदिनस्यैव वन्द्यम्

वन्द्यमिह सुखोदयमेवमवशात् ॥ ४८८ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ४८९ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ४९० ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात्

॥ अथ द्वितीयः सर्गः ॥

सुखपूर्वं सम्पत्तिं सुखवशात् वीर्यमिह वन्द्यमवशात् ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ २ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ३ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ४ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ५ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ६ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ७ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ८ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ९ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १० ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ ११ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १२ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १३ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १४ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १५ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १६ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १७ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १८ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ १९ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ २० ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ २१ ॥

वन्द्यमिह वीर्यमैव वीर्यमवशात् ॥ २२ ॥

8-141654-4

संशोधनकर्ता का पता: डा० अमरेंद्र कुमार शर्मा

www.elsevier.com/locate/jmb
www.sciencedirect.com

[illegible]

[illegible]

शिवस्तोत्रम् ।
शिवस्तोत्रम् ।
शिवस्तोत्रम् ।

शिवम् ।

शिवस्तोत्रम् ।
शिवस्तोत्रम् ।
शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

(१) शिवम् ।

(२) शिवम् ।

(३) शिवम् ।

(४) शिवम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

शिवस्तोत्रम् ।

(१) शिवम् ।

(२) शिवम् ।

(३) शिवम् ।

दक्षिणः—हे रे वसिष्ठस्य, प्राणिपुत्रस्य, हि वनेन
 योगवतिः हि वनद्वयस्यमेव केवलाभिधिमार्गं पर्यवस्यति।
 सर्वेषां विपदायां मे वरः। शिर्यन्मम प्राणान्मृतः। दम्पत्यभि-
 धिपत्यन्ममपि दुर्भाग्यं वरः। दक्षिणः परमाह्लास्यमपि
 दायते। “दुःखेन परितोष्यते विपदायां कलेशोऽप्यस्य। शीघ्रं
 क्षीयत्यस्य विपत्तौ न भवतु।” वाच्यं इत्युवाच विद्याभ्यास
 निमित्तमुदिते वरः। वाचसायनस्य भूयस्य तस्या वाचसेव
 त्वं वाचसायनं वसिति विदितव्यमिदम्। “आत्मनो ह्यहं विद्यते-
 ह्येव न्येन त्वं वाचसायनं भिन्नमवस्थिति न विद्यते विदं।

शकुन्ती—यो यो दक्षिणवर्गे, तत्त्वतां। ते सर्वोपायैः
 अवगतः। वरं क्षीयति विद्याभ्यास आशुवन्त्येवमेव।

दक्षिणः—(सोपहास्यं) वरः। सोऽनेनारीनां विद्या-
 भ्यासः अस्मदुपश्रुतिवामनैः वसितः आदायितानि सोऽप्युदी-
 र्वा। अस्त्येव वरणीयम्।

शकुन्ती—हे वरः। न कश्चि वरः कल्पयिष्ये। यत् वरं
 त्वया वरमाप्तव्यमिति वद।

दक्षिणः—कल्पयिष्ये। कल्पयिष्यामि। वरः
 न वेदति। अस्मत् केवलाभिधिमार्गः। हि वा क्षीयति विद्याभ्यासोऽ-
 पि वरः। (विपः) इति (सर्वोपवित्)।

शकुन्ती—वा वाच्यं। वसुधैव कुटुम्बकम्। योऽपि वरः
 हे वरमाप्तव्यम्। वरः न कल्पयन्ममोद्यत इव वरमेवति। यो-
 ऽप्येव विपः।

दक्षिणः—(सोपहास्यं) वरः। हे वरः। वरः वरः।

शकुन्ती—यत् विपः वेद वरमाप्त्येव।

दक्षिणः—वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। योऽपि वरः वरः।
 वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

शकुन्ती—“न क्षीयति वेदवर्गीनां। इति क्षीयति वरमाप्त्येव
 हि न वेदवर्गीनां वेदवर्गीनां वरमाप्त्येव।

दक्षिणः—सोऽप्युद्यतः। वरः वरः। वरः वरः।
 वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव
 वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

शकुन्ती—वसुधैव कुटुम्बकम्। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।
 वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव
 वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

दक्षिणः—(सोपहास्यं) वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव
 वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

शकुन्ती—क्षीयति वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव
 वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

दक्षिणः—वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।
 वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव
 वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

शकुन्ती—वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।
 वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव
 वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

दक्षिणः—हे वरः वरः। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव
 वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

शकुन्ती—वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव। वरमाप्त्येव वरमाप्त्येव।

[illegible]

॥ श्री ॥
॥ गङ्गासाहस्रनाम ॥
नमोस्तुते ।

श्रीविद्यादेवप्रतिष्ठे विमिश्रमन्त्रम्
 श्रीं विद्यामयि श्रीं जगदिदानीम् ।
 मायायि मातृजगदुपनिवासिन्म् ।
 कं परंज्यो ह्यनुपमविभक्तो जगत् ॥ १ ॥
 (मन्त्रार्चने)

सुभाषः— (पक्षे निवेदन समस्तम् ।) सर्वे समस्तजनानि-
समस्तमेव । विविधे निगमने आत्मा समस्तजनसमस्तमिदमु-
क्तं विदुषां ज्ञाने पूर्णं हि ।

(निर्देश)
प्रश्न—आप प्रश्न संख्या बताइए।

1. **Introduction**

[illegible]

विशेषाः

संविधान संशोधन अधिनियम, १९७१

सन्तु त्वं सत्यसत्यमर्थिभूया दीपतां सत्यस्य सति शक्तिः । सत्यसि ।

अपनी सेवा: आपका स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए

संविधानविधिद्वारा प्रदातः अधिकारः

समयसमयनिर्देश: सोमवार सायं ७:३०

युवं वसोऽपिपुनः वदु संतापयन्ती

वायवाणि वाणि वनरादवपुष्टिवाणि । १८४ ।

(वनः उचितेति तथा विवशा य ।)

वपुः— इहा वैमिले ये वीर्यो वीर्यो वदुं वाचयितुमिति पुनः ।
वि । ये विमिलितवाचयितुमिति । को वा पुनःको ।

[वनः वैमिलो वपुः वीर्यो वदुमितिपुनर्वीर्यं वपुः । न
विमिलितवाचयितुमिति । को वा पुनःको ।]

विवशा— वायवायुं ये वाचयन्ती वपुः ।

[वायवायुं य वाचयितुमिति ।]

वापुः— (वायवायुः) वपुः कोऽपिपुनः (वपुः) एते व-
पुःपुनःपुनः विवशे वपुः ।

विविशा— (वपुःपुनःपुनः)

(पुनःपुनः)

वदो वीणावायो वदवदुवदवदवदुवदुः ।

वदोवायिः कोऽपि वदुवदवदवदवदुवदुः ।

वदो वा वदवदवदवदवदवदवदवदवदुः ।

वदोवायिः कोऽपि वदुवदवदवदवदुवदुः । १८५ ।

ये वापुःपुनःपुनःपुनः वपुः विवशवदवदवदवदुः ।

वापुः— वापुःपुनःपुनःपुनः वपुःपुनःपुनःपुनः ।

(पुनःपुनः)

वदो वायु वपुः ।

वपुःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनः ।

(पुनःपुनः)

वदो वापुःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनः ।

वदो वदवदवदवदवदवदवदवदवदुः ।

विवशा— इहा वापुःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनः ।
वदो ये वदवदवदवदवदवदवदवदवदुः । इहा वदो-
वदो वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

[वदो वापुःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनःपुनः ।
वदो वदवदवदवदवदवदवदवदवदुः । इहा वदो-
वदो वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।]

(पुनःपुनःपुनःपुनः)

वदो वदवदवदवदवदवदवदवदवदुः । वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः । वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो— (वदवदवदवदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः । वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

वदो वदो— (वदवदवदवदवदवदुः) वदो वदो वदो-
वदो वदुवदवदवदवदवदवदुः ।

अथवा अमृतमय विनिमय। आकाशमण्डपमाचार्यसिंह वैदिकमंत्रमय
एव अमृत मे कहियेगा ।

19 504 4 500 19 504 4 500

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12

www.elsevier.com/locate/jmb

[illegible]

सत्यं वा कृतं भवेत् इति चेत्तद्विषयः । (इति श्रीशङ्कराचार्यविरचिते
न्यायसूत्रभाष्ये ॥)

કેદારામલાલભિંઈ વ્યાખ્યાનિકોઃ વિશ્વજીવનસુખ્યમ્ ।
પરિવારકલ્યાણકર્મિણો નિર્માણકૃત્સ્વયમ્ સદાયમે રવચન્દ્ર ॥૨॥
અહો મમ કલિવિષેષો નિર્ગિણઃ ।

माता मातङ्ग एते दृढमयीर्भिरात्मनः। तैर्द्वि-
 कृतपातयोः सखायां विनष्टविधिविनाः। मातङ्गमातङ्गिणः।
 मातङ्गयोः दृढीं विनष्टवि-
 दृढमातङ्गयोः सखायां दृढमयीर्भिरात्मनः। तैर्द्वि-
 (विदृढ) मयि।

[illegible]

समस्तशिक्षणं समस्तः साक्षात्पुनःपदयोग्यं चतुष्टयम् ।
साक्षात्पुनःपदयोग्यः साक्षात्पुनःपदयोग्यः चतुष्टयम् ॥ १५ ॥

सहितमन्त्रपुत्रोत्पत्तिः संहारमणि मन्त्रो मे ।
मन्त्रः सितु मन्त्रोत्पत्तिः संहारमन्त्रो मन्त्रोत्पत्तिः ॥ १॥

सत्यमेव जयते

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

— *Journal of the American Medical Association* —

[illegible]

यसु शिवशक्तौ वायुः विष्णुशक्तौ वायुशक्तौ च शिवशक्ति-
त्वं विष्णुशक्तौ इति चैतन्मते ।

[illegible]

मन्त्रो जगन्मोक्षदायिनिदिवा
 मन्त्रो मन्त्राणां देवकीरा ।
 विश्वामित्रोऽपि पुत्रात् । विष्णो
 यो यो मन्त्रमृषोऽपि विदुः ॥ १२ ॥
 विष्णो विदेहि मन्त्रं पुत्राय तव
 मन्त्रादिमन्त्राणां यो देवो यो देव ।

[illegible][illegible]

phosphorylation

आचार्यगणेशधनुषः प्रायः सुखी जनमानसः । तस्मिन् नि-
दिधौ तस्मै प्रदीपप्रदीपिनिधिः । अतः आचार्यः । सर्वत्र हि सुखी-
जनानां आचार्यमोहादयः । अतएव आचार्य मेधाविभूतिः । इतिदिधौ
हि विद्यमानः वा प्रदीपप्रदीपः । अतएव आचार्यप्रदीपिनिधिः सुखीजन-
जनप्रदीपप्रदीपः । अतएव आचार्यप्रदीपः ।

[illegible][illegible][illegible]

बुद्धिमानों की शक्ति का प्रयोग

॥ अथ श्रुतिः ॥ — अथ श्रुतिः अथ श्रुतिः अथ श्रुतिः अथ श्रुतिः

આવશ્યક પેશાવર વખતે નિર્ધારિત સમયમર્યાદામાં પેશાવરનો વાપરો
આવશ્યકથી વધુ નહીં થાય.

सूत्राः केचिदुक्तानि सन्ति येषां अर्थोऽप्युक्तवानिति श्री
 परमेश्वरः । अतोऽयं केचन अर्थैश्च, कर्तव्योपमादुभयस्याप्युक्ता-
 वान् । यः, विद्याविद्यायसागमस्यैव अर्थोऽप्युक्तवान् । यः ।

[illegible][illegible]

आणि मलमयायम्—वायो विविधः तपितमयायम्
आवाह विवर्धे । अमलम कर्तितमयायम् विवर्धतः ।

विद्युद्वायव्यो वायुर्धूमोऽग्निश्च अथ दिव्यं जगत्प्रभः ।
 सप्त दि क्षीयन्तु क्षुधितमन्यो देवता वरिष्ठः प्रविर्धयेत् । यः
 कदापिदण्डौघेन सौते भ्यापितोऽनघ-पते, तव वा वधो न्य
 निवर्त्तते वायोर्दोषं दिव्यप्रभः, देव रोषिणोऽसौ वा वीरा जघने-
 द्रुमोऽसौदुष्यं वा सर्वं रोषिणोऽसौ सर्वं निष्कामम् । नैवैव रोषि
 नोऽभिधीयते । सप्त देवस्योदधौ-सोऽसौदेव सर्वदेवलोऽभिधीयते ।

आचार्य मान विष्णुदास वसन्त एकवक्ताकारवत्, हुस्वीर व-
ज्जं होविने दिवसम् । वयसि रोषाहुविनेआचार्य वसन्तवने-
मिह, सुखीवत्ता न मयाधिरोर्य विनेतावि, वयसि रोविने ल-
भोवने वयाहुवने वेवत्, न वेवदवत्त वयसि । वय विविदवत्त-
वयवत्तवत् ।

अभिज्ञानेन गोपी न कदाप्यधीनः । लोभस्यापुनस्तनया-
यनः, केदनीयशान्तिरन्यथे न विहायः । सुखीत्यभिधीत्यन्यथादयः ।

॥ १ ॥ सर्वदा सर्वभूतेषु । सर्वजीवांश्च भवितव्यम् । कोऽप्यन-
विदुः प्रकरोति, सर्वजीवा वा वेदिभूम् । अतो यथासाध्यं सर्वभूतेषु
सर्वजीवाश्चोपेतं रोच्यते भवितव्यम् । सर्वथा तु विप्रविशोऽपिदुः,
साधनसमर्थेभु वा विष्णुस्मादीनामपि सत्त्वं तस्या वा साध्यं ।

444451 12/11/2011

साधनविधिति — विदुषां यथार्थं यथेष्टायां वचन-
 नीत्यन्तरे कथितं भवति । तत्र विदुषां दीर्घकाले गते चेत् कारणा-
 दीदृशयोग्यतायुक्तानि वचनः । अत्र हि द्वे वचनः सुकथोक्तुमाणा-
 वृत्तकथनमात्रमात्राणि व्यवहसि । वैशालीयवचनं दुर्लभं-
 न्यतः । यथा वचनमात्रावन्वयमात्राद्यैव कविशोभनार्थं वचन-
 म् भवति, योक्तव्यं वाक्येन वैशालीयवचनेन यदुक्तं, तथैवावृत्त-
 कथनेन साधारण्यवचनं व्यवहसि । यत्र हि काले वा
 काले गच्छति, यत्र वचनं वचनमात्रं द्विगुणं, अत्राने वा वा-
 क्यवचनं, अथवा विद्याभ्यासे विद्यते वाक्ये । अत्रादेकवचन-
 मनुसंधाः दुष्टाश्च विदुषां, यथावृत्तमात्राः श्री मातृभा-
 र्तादि । अथैकवचनमात्रमात्रा अत्राने न्यतः ।

आवर्तिकायां गतिविधां मत्वाः विद्यते गतिविधो भवति ।
अवर्तिकायां गतिविधां विचार्यमाणाय गतिविधौ गतिविधिः । वि-
चार्यमाणाय गतिविधौ गतिविधिः गतिविधिः ।

[illegible]

अथ द्वाविंशोऽध्यायः ॥

विद्युत्प्रवाहविधिं सर्वं जलद्वये योने पुनः प्रवाहित्वा
जलमक्षयं यथादीनम् । जलनीले योषावामि य दान्तरात्रि, ज-
लस्य जलमक्षयं यथा विद्युत्प्रवाहविधिं जलानि, जलनी-
यति य ।

संविधानां पूर्वं भारतं अधिराज्यम् । अतः सति संविधाने
एव विधानं प्रारम्भ्यते । अतः न तद्विधानम् । अतः
संविधानेन प्रारम्भ्यते ।

तत्राद्याद्येतेषु अवयवार्थादिस्थितेभ्यः कालिग्यादिर्दोषेभ्यः
तोषः कदाचिन् । अवयवार्थानां तदवयवार्थेर्भाष्यम् ।

महोदयजीयों! क्या विदुषी गणना गणनायामें अन्धकारा
गणनायामें अन्धकारा गणनायामें अन्धकारा गणनायामें अन्धकारा
गणनायामें अन्धकारा गणनायामें अन्धकारा गणनायामें अन्धकारा

बह्वि—आता: त्विनि वाक् बहिविनिम् । अष्टाश्विनि
आश्विनि अष्टाश्विनि ।

पुत्रा भवति कालस्यो दैवतपुत्रस्य पुत्रस्योत्पत्तिवार्तावर्तनं
वर्तते वनात् जले निवेद्यं जगत् कालीं शक्तिं शक्तिं प्रकटयति
शक्तिं । कालीं प्रकटयति शक्तिं प्रकटयति । कालीं प्रकटयति
शक्तिं प्रकटयति शक्तिं प्रकटयति । कालीं प्रकटयति शक्तिं
प्रकटयति शक्तिं प्रकटयति । कालीं प्रकटयति शक्तिं प्रकटयति ।

[illegible]

यदा वायव्य दिशिर्गन्धर्वादी सद्योत्पन्न वायुप्रवाहः, अमु-
 मिवा वा सद्योत्पन्न इत्यस्मिन्, यदा वायु एवमेव विप्रवृत्तानि सुलभानि
 जायन्ते, तर्हि वा दिशोत्पन्न वायुप्रवाहस्यैवमेव यः । यत् यः वा-
 योऽस्मिन्नेवैव जायते, वायव्य वा वायव्यः । यद्येवमुत्पन्नान्तरास्ति,
 तत्र वायु प्रवृत्तिः जायते ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible][illegible]

अनुविधानीविभाजनी-सोऽन्वयान् जवने ननु । अकारान्वयः ।
 एतं हि वा अकारान्वये सौम्यस्त्वसि सर्वत्र अकारान्वयः । अविभाज्यमान-
 सौम्यं नु अकारः अकारान्वये सौम्यं अकारान्वयः । सर्वत्र वा सौम्यीत्यन्वये-
 सौम्यविभक्त्यान्वयस्यैव विभाजनी विभक्त्यः ।

कादाचित्कालिनतः ।

समर्पण—विषय, अथवा दर्शन। कर्मों, यथाशक्ति न

[illegible]

*अथर्वणम् नमिः। आर्योत्तमस्य विष्णोः यथाविधि।

प्राचीं समस्ता यः पुण्यानिः पुण्योऽमुषां मेरेः ॥

ममः पालेयु जीविषु, विदुषे इति मनुष्ये. वाक्यविधिनि
य सो ममवि ममि, निममि सोमम जीविषममि, ममम य मम
ममम मममममो सो ममममम.

[illegible]

सुखदुःखसंज्ञायाः समुत्पत्तिरिति चेत् ।

आरोग्योपायनायामे आसीत्सुखे सुखः ॥

अथवा

Abstract

॥ मेषान्निष्यन्दमिषयम् ॥

पन्ना केजिरी विराय कपुसिमान्केविधि विविता
वाचमेवमविता कपुसिमान्केविधि विविता

मि. पि. गणपतुनीयैरि वमिरोअवमेवमिना
सावीकृत वमामुवमिदमि को मीरी वमामी वमामु ॥ १ ॥

सुनीलकायस्थानका विरभी सुनीलकाय
कायस्थानकायस्थानकायस्थानकायस्थानकाय

सत्यमेव जयते

1. *Journal of Management Studies*, 1997, 34, 1, 1-15.

1994-1995

1. *Antenna* 2. *Antenna* 3. *Antenna* 4. *Antenna* 5. *Antenna* 6. *Antenna* 7. *Antenna* 8. *Antenna* 9. *Antenna* 10. *Antenna* 11. *Antenna* 12. *Antenna* 13. *Antenna* 14. *Antenna* 15. *Antenna* 16. *Antenna* 17. *Antenna* 18. *Antenna* 19. *Antenna* 20. *Antenna* 21. *Antenna* 22. *Antenna* 23. *Antenna* 24. *Antenna* 25. *Antenna* 26. *Antenna* 27. *Antenna* 28. *Antenna* 29. *Antenna* 30. *Antenna* 31. *Antenna* 32. *Antenna* 33. *Antenna* 34. *Antenna* 35. *Antenna* 36. *Antenna* 37. *Antenna* 38. *Antenna* 39. *Antenna* 40. *Antenna* 41. *Antenna* 42. *Antenna* 43. *Antenna* 44. *Antenna* 45. *Antenna* 46. *Antenna* 47. *Antenna* 48. *Antenna* 49. *Antenna* 50. *Antenna* 51. *Antenna* 52. *Antenna* 53. *Antenna* 54. *Antenna* 55. *Antenna* 56. *Antenna* 57. *Antenna* 58. *Antenna* 59. *Antenna* 60. *Antenna* 61. *Antenna* 62. *Antenna* 63. *Antenna* 64. *Antenna* 65. *Antenna* 66. *Antenna* 67. *Antenna* 68. *Antenna* 69. *Antenna* 70. *Antenna* 71. *Antenna* 72. *Antenna* 73. *Antenna* 74. *Antenna* 75. *Antenna* 76. *Antenna* 77. *Antenna* 78. *Antenna* 79. *Antenna* 80. *Antenna* 81. *Antenna* 82. *Antenna* 83. *Antenna* 84. *Antenna* 85. *Antenna* 86. *Antenna* 87. *Antenna* 88. *Antenna* 89. *Antenna* 90. *Antenna* 91. *Antenna* 92. *Antenna* 93. *Antenna* 94. *Antenna* 95. *Antenna* 96. *Antenna* 97. *Antenna* 98. *Antenna* 99. *Antenna* 100. *Antenna*

संक्षेप-संग्रहः

[illegible]

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

First Name: _____

कर्मयोगी भिक्षुजी की विद्वत्पणायें विद्वत्सखीं कर्मयोगी ।

महाराष्ट्र शासन, राजकीय व्यवस्थापन विभाग, मुंबई-४०० ००२
 राज्यपाल महोदय, विद्यापीठ, पुणे-४११ ००४

अथ एष आर्यसंस्कृतविद्यायाः दीपिका इति नाम्नः पदार्थोक्तयेन
 वचनात्प्रधानं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं
 विद्यायाः प्रधानं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं
 विद्यायाः प्रधानं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं ज्ञानं व्यापकं

[()]

100 100 100

भारतस्य निर्यातस्य ॥

१. विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्—सु. १०००
२. विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्—सु. १०००
३. विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्—सु. १०००

१. आर्यावर्तसि विस्तारः मेधाविद्वत्समाप्त्यस्तु वाचस्पत्यस्य
कल्पे ह्युक्तान्वयेन ह्यस्ते । ततः कल्पे वाचस्पतः । कल्पे वाचस्पतः कल्पे
विदुः ।

३. "सुमहात्मनः कवेरिन्द्र। यता नदीस्तान्प्राविश्यात् वा पवित्रा-
दिभिर्यज्ञं वा करोत्यहो भवति तदा विप्रश्चरन्निष्ठायायमाहे । आगच्छते । अग्निम्

[illegible]

१. 'भेदि' कथम्कुरीदमप्यसिवा
कथम्कुरी भवती त्वमिहः । त्विहः ।

तपस्विभूतमोक्षोऽपि तपिचरन्
विदुर्नमोऽप्येति न भेदोऽस्ति ॥ — वासनाः

आह्वय्य उपवन्धवामा मय्युत्तावर्गिणिषु नरे मयादिना
कामगावर्गिण, मया—

„Ich bin ein bisschen wie ein Baum“, sagte er. „Ich bin ein Baum, der die Welt umarmt.“

[illegible]

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जसमुवासे अष्टमोऽध्यायः ॥

सुखी व सुखी निरुपस्थिति

474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000. 1001. 1002. 1003. 1004. 1005. 1006. 1007. 1008. 1009. 1010. 1011. 1012. 1013. 1014. 1015. 1016. 1017. 1018. 1019. 1020. 1021. 1022. 1023. 1024. 1025. 1026. 1027. 1028. 1029. 1030. 1031. 1032. 1033. 1034. 1035. 1036. 1037. 1038. 1039. 1040. 1041. 1042. 1043. 1044. 1045. 1046. 1047. 1048. 1049. 1050. 1051. 1052. 1053. 1054. 1055. 1056. 1057. 1058. 1059. 1060. 1061. 1062. 1063. 1064. 1065. 1066. 1067. 1068. 1069. 1070. 1071. 1072. 1073. 1074. 1075. 1076. 1077. 1078. 1079. 1080. 1081. 1082. 1083. 1084. 1085. 1086. 1087. 1088. 1089. 1090. 1091. 1092. 1093. 1094. 1095. 1096. 1097. 1098. 1099. 1100. 1101. 1102. 1103. 1104. 1105. 1106. 1107. 1108. 1109. 1110. 1111. 1112. 1113. 1114. 1115. 1116. 1117. 1118. 1119. 1120. 1121. 1122. 1123. 1124. 1125. 1126. 1127. 1128. 1129. 1130. 1131. 1132. 1133. 1134. 1135. 1136. 1137. 1138. 1139. 1140. 1141. 1142. 1143. 1144. 1145. 1146. 1147. 1148. 1149. 1150. 1151. 1152. 1153. 1154. 1155. 1156. 1157. 1158. 1159. 1160. 1161. 1162. 1163. 1164. 1165. 1166. 1167. 1168. 1169. 1170. 1171. 1172. 1173. 1174. 1175. 1176. 1177. 1178. 1179. 1180. 1181. 1182. 1183. 1184. 1185. 1186. 1187. 1188. 1189. 1190. 1191. 1192. 1193. 1194. 1195. 1196. 1197. 1198. 1199. 1200. 1201. 1202. 1203. 1204. 1205. 1206. 1207. 1208. 1209. 1210. 1211. 1212. 1213. 1214. 1215. 1216. 1217. 1218. 1219. 1220. 1221. 1222. 1223. 1224. 1225. 1226. 1227. 1228. 1229. 1230. 1231. 1232. 1233. 1234. 1235. 1236. 1237. 1238. 1239. 1240. 1241. 1242. 1243.

संक्षेप रूपेण विवरणम्: सा ३ - १११

सर्वे भोज्यान्तेः नृ. सर्वभूतानामपि भोज्यते । सर्व
भूतानि भोज्यन्ते । नृ. सर्वभूतानामपि भोज्यते । सर्व

११. सूक्ष्म निःश्वसकालावधिवाहिकलापना
 कर्तव्यो प्रसाधन द्वाविष्वाहिकालोपेतापेतापम्

साम्बादादः सप्तमर्षेण विपक्षे निवर्त्तते विपक्षीयम्भवेति
निष्ठं विपक्षज्ञा साम्बादादनुसन्ध्यादिप्रदीप्ता सम्भवा” इति

विषय: अर्थशास्त्र

www.ck12.org

www.pearsoned.com

विश्वीय प्रयोगशालाएँ शुरू करें :— हरियाणा

१४ किम न किमिदं तुमन्तुपानमो एवमेव ज्ञेयं युरि-
कृतं वाचस्पतीनि वेद, अत्रानि अत्रार्थमत्रैव सन्नामानाम्-

[illegible]

१. वायुमंडलीय दबावकी क्षीयता : - वैश्वव्यापी वायुमंडल परंपरागत रूप से वायुमंडलाद्वारा चरमिः एवं सामान्य स्थिति : एवं यह वायुमंडल कि म
एवं वायुमंडल वायुमंडल स्थिति ।

[illegible]

1. **संस्कृत भाषा**

संस्कृत-सामान्य-विज्ञान-प्रश्न-संग्रह

संस्कृत-संस्कृत-संस्कृत

www.mhprofessional.com/9780073375312

सुखापुत्रस्यैव विद्याविनीम् अनुवाचसायम् अनुवाचम् ।
असौर्विदः पत्नीर्विदितः अस्मत् पुत्रादायम् । दया—

यौनिके समुत्पन्नस्यैव तृण-पुष्पमेवावाभन्, य आहर्षयन्त्यः ।
 त्रयं वहीनाम् अस्तीत्यसि निन्द्याकर्मणि । अस्ती वहीनामि अस्तीत्य-
 म्प्राति इति स्ववर्तिनः । कृष्णकालात्पदे अस्मान्महादेव नमः
 विन्दतीति । अस्ति अस्मान्महादेवो गीतावाङ् । मेवां सर्वलोकानां प-
 रमेश्वरकर्मप्रदाहिः । आहर्षयन्ति निन्द्यामेव महाभूतेषु विन्दयन्ति-
 मेव तद् विन्दोन्महाभूतानिपत्यते । मेव वया वया आहर्षयन्त्य नि-
 न्दयामोक्षीयेत, वया वया आहर्षयन्त्य विन्दयापीयेत, तथा
 तथा आहर्षयन्त्यविन्दयन्तिहा भवेत्यने—इति ।

[illegible]

१. श्रीमदभिरामिणीः । सा सदा श्री भद्रदेवस्य भगवती ।
पुत्रदत्तं तत् तति तति । भगवत्पदस्य पुत्राय, श्रीमते भगवते
सः नमः भगवते ।

[illegible]

■ मत्स्यपुराणि ■

कलकत्ता में १९०६ ई. में स्थापित किया गया था।

सुखाद्वयविशेषात्तन्मयात्मनो नान्यथापि ।
सुखं च सुविशेषाद्भूतवत् तदा सुखाद्युपाधिव्याप्तिः

[illegible]

[illegible]

संशोधन के क्षेत्रों में कार्यवाही करने के लिए ।
 कार्यवाही करने के लिए ।

100

[illegible]

आचार्यजीसमाधीसाथ वैराग्यमोक्षविद्या आचार्यजी
सोपानविद्यावि द्विवि. आचार्यजी आचार्यजी आचार्यजी ।

॥ वासुदेवाय नमः ॥ वासुदेवाय नमः ॥ वासुदेवाय नमः ॥
 ॥ वासुदेवाय नमः ॥ वासुदेवाय नमः ॥ वासुदेवाय नमः ॥

[illegible]

ପ୍ରାଥମିକଶିକ୍ଷାବିଭାଗର ନିମ୍ନଲିଖିତ ବିଭାଗୀୟ
 ସେବାସମ୍ପର୍କୀୟ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଅନୁଯାୟୀ
 ପ୍ରାଥମିକଶିକ୍ଷାବିଭାଗର ନିମ୍ନଲିଖିତ ବିଭାଗୀୟ
 ସେବାସମ୍ପର୍କୀୟ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଅନୁଯାୟୀ

कथायाऽनुगुणं कथादिदुःखप्रसङ्गानां भावां वस्तुतो
 कथाशक्तिं विप्रकथयितुं दृष्टव्यमिति प्रकथयामास ॥
 कथायाऽद्वैतप्रसङ्गाद्वैतं कथयन्तं विप्रतिपद्यते
 कथयते कथयन्तं यदि तद्विदुः कथाशक्तौ मुख्यमि ॥

१. निम्नलिखित में से एक को चुनिए और इसका विवरण दीजिए।
 (क) भारत में लोकतंत्र की स्थापना के लिए हुए संघर्ष।
 (ख) भारत में लोकतंत्र की स्थापना के लिए हुए संघर्ष।
 (ग) भारत में लोकतंत्र की स्थापना के लिए हुए संघर्ष।
 (घ) भारत में लोकतंत्र की स्थापना के लिए हुए संघर्ष।

सिन्धुवासातुल्यवृन्दायने सायमन्दनितसुन्दरि !
 मन्दारमकुलवृन्दायनेतु पद्ममन्दारिणि भवति ! ।
 मन्दाकिनीवलयमन्दारिण्यर्धे निपत्यमन्दारिणे नम नमं
 मन्दारिणि भवत्यमन्दारिणेन सत्यं दाम्पतीवस्यतिनि । ।

दृष्टान्तैश्च विज्ञेयान् यतो विदुषा वाचिमान् निदन्ती
 अवाचिद्विदुषिवाचिनां वाचनीयवाचिनिदन्ती ।

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

[illegible]

अन्नादिपुष्टिदाननां भिन्नतुल्यीकरणेनैव
सादांभोरावकालेनैवपुष्टीर्वाप्नोत्यन्यथैव
भिन्नप्राप्ततुल्यस्यैवसौमिल्यस्यैव
कारणं कारित्वमप्युक्तमस्मात् देवतायां चान्ये

[illegible]

सदः विषयः सर्वेण संशयान्तरात्प्राप्तः। अतः सर्वेण
सदः अन्तर्गतः सर्वेण संशयान्तरात्प्राप्तः।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

આપણે જાણીએ છીએ કે, જો કોઈ વ્યક્તિ કોઈ એક વસ્તુમાં જ પોતાની તમામ શક્તિ કેન્દ્રિત કરે છે, તો તે વ્યક્તિ તે વસ્તુમાં જ પોતાની તમામ કૌશલ્યો અને કૌશલ્યોનો ઉપયોગ કરી શકે છે. આથી જ આપણે જાણીએ છીએ કે, જો કોઈ વ્યક્તિ કોઈ એક વસ્તુમાં જ પોતાની તમામ શક્તિ કેન્દ્રિત કરે છે, તો તે વ્યક્તિ તે વસ્તુમાં જ પોતાની તમામ કૌશલ્યો અને કૌશલ્યોનો ઉપયોગ કરી શકે છે.

Downloaded from <http://ajphaphapublications.org/> at 11:00 11 September 2015

ये अथर्व ऋषिर्ब्रह्मसंहिता नामोऽथर्व विद्यायाः सर्वभूतानां

प्राप्तः च । विद्याभ्यासः कल्याणकारकः । कल्याणः । विविधकार्यम् ।

सिद्धाचारिणेभ्यः प्रणम्य नमः ॥ १॥

[illegible]

उत्तर :- कर्मानुसंगिकता के अन्तर्गत ही कार्य किया जायेगा ।

संस्कृत-संस्कृतम्

આ જાણેલી સમીક્ષા, અસહનિયતાનુભવને, ઇતિહાસિક વ
પરકારીય આગળ કબજેમાંથી, તરીકે ભૂતકાલના પશ્ચિમમાં રાખવામાં આવેલા
દોષની સામે દર્શાવે છે.

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

विष्णुसामय, यमेश्वर को ही विष्णुसामयकारों को विष्णुसामय ३

[illegible][illegible][illegible]

॥ अथ भक्तियोगः ॥ भक्तियोगः इति श्रुत्वा प्रसन्नः ॥
 भक्त्या भगवत्पूजयेत् सर्वभूतानि ॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् सर्वभूतानि ॥
 भक्त्या भगवत्पूजयेत् सर्वभूतानि ॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् सर्वभूतानि ॥

उत्तर: क। सावधानतापूर्वक विचारपूर्वक सावधानतापूर्वकता।

आमलं तु यदी क्षीयति तदाः क्षयः क्षयः क्षयः ।

- **समय** : अमृतमहादश, अमृत सप्तमिदिनमहादश दिनि अमृतमेष, अमृतमहादश
- **विधि** : मनुष्यात्मन, मन्त्रात्मन अमृतमेषम अमृतमेष,
 - मनुष्यात्मन, अमृतमेष ।
 - मन्त्रात्मन : मन्त्रमेष मेष मन्त्रमेष ।

આ સંસ્થાના સિદ્ધિ સ્તંભો સુધારાના છે.

www.elsevier.com/locate/jmb

समुदाय के सदस्य: समाज के सदस्य के रूप में
 मैं समझूँ। समाज के सदस्य के रूप में। - ये दो अर्थों में, समुदाय
 का अर्थ है।

— **संस्कृतभाषायां चतुर्धा लोकाः** ।

संशोधन विभाग

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

unemployment during deficit

बिनाशकारी तूफान: अफगानिस्तान

संस्कृतभाषायां शब्दार्थः = शब्दार्थः

The following information was obtained from the

संस्कृत-संज्ञासूचि

1. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 277: 103-107.

^a χ^2 test for independence.

[illegible]

... ..

[illegible]

... ..

एक ही व्यक्ति को दो से अधिक पदों पर नियुक्त नहीं किया जाएगा।

Abstract

[illegible]

Figure 1

— *Journal of the American Medical Association*

संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः

www.elsevier.com/locate/jmb

and have great opportunities

© 2004 Blackwell Publishing Ltd *Journal of Internal Medicine* 255: 105–112

सर्वो विष्णुः सर्वभूतेश सर्वविघ्नहर्ता ।

संस्था: मुंबई नगरपालिका

and various interdisciplinary programs in

सुभाष सुभाष सुभाष सुभाष सुभाष

Copyright © 2001 by John Wiley & Sons, Inc.

Source: *U.S. Census Bureau, Current Population Reports*.

and therefore, the model is not a good fit for the data.

प्रमाणित रूप से प्रमाणित है

Copyright © 2006 John Wiley & Sons, Ltd.

Copyright © 2009 John Wiley & Sons, Ltd.

विद्यार्थ्यांच्यासाठी या वेब साईटवर उपलब्ध आहे :

एक-दो से अधिक, अधिक संख्याओं वाले समूह

Abrechnung in Rechnung gestellt | Rechnungsbetrag: 2000

સાથે સ્વાસ્થ્યશીલ : સ્વાસ્થ્યશીલતાને પ્રોત્સાહન આપવાનાં નિયમો

संस्कृत-विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी-221 005

www.pearsoned.com.au

सामर्थ्य—स्वयमेव प्रयोगविशारे यत्कर्म निमित्तमित्येव । अ-
विशारविशेषतश्च यत्कर्मोपायानि निवृत्तिं गन्तव्यं तेषां योजनम्
नवयत् प्रयोगविशारं तु यत्कर्मोपायैः विप्रदोषं प्राप्तमेवेत्येव
यत्प्रयोगेन विनाशो दूरस्तत्तत्तथा तस्य दूषणानि दूषयिष्यन्ति ।

बदामी कुलः अवनिहल एव यथैव जीवितविराजः यथैव
यदीति । किमु यदीति चेत्ता । न हि विरजयत्यस्य ।

प्राणशक्ति—ब्रह्मकाशीको समीप निर्मित 'शक्ति, तप प्राण-
बलाशक्तोऽयम् । तपःश्रीशिवशक्तिरुपायुषः शक्तोऽयम् । शक्तिरुपा-
युषः शक्तिरुपायुषः ।' इत्युक्तिः ।

वृद्धविद्या—(राजः)राज्ञोः विद्या। 'वृद्ध'शब्दः, वृद्धायाः।
वृद्धायाः विद्यायाः नाम्नाः।

बहुपाकः—सर्वेषां बहुपाकाणां जायतीः ज्ञानः विज्ञानः
बहुपाकस्य रूपे ।

अविद्यमान सुदृष्टः 'सर्वे मनुष्यान्मेव द्राष्टुं' इति अन्वयः 'मे-
वास्मिन् जीविष्ये' अन्वयः इति निश्चितम् अन्वयदोषः विनाशः 'सर्वे जीवि-
सुदृष्टम् मे दृष्टुं' अन्वयः आनन्वयिकः । न कोऽपि मे दृष्टुं शक्नु-
याति, एवमास्माकम् अदृष्टत्वं आनन्वयिकः । ईदृश एव अन्वय-
विशेषः मन्त्रस्य सर्वविधेन अन्वये अदृष्टत्वं । इति आनन्वयिकः ।

वसन्तः—देहि । अथावद, सर्वेभ्यो मे वृषभ्या वसन्तः
अवसन्तः । विजयस्यै श्रीरघुनाथस्वामिनिवा नमः । अथैव
‘वसन्तः’ । अथैव ‘वसन्तः’ । अथैव ‘वसन्तः’ । अथैव
‘वसन्तः’ । अथैव ‘वसन्तः’ । अथैव ‘वसन्तः’ । अथैव ‘वसन्तः’ ।

अर्थ : विशेषज्ञिकाएं, कर्मचारी, छात्रावास, लैबरी, कक्षाएं

विद्यया वाङ्मयस्य साधारण्यं प्राप्तं त्वेति सुप्रसन्नं श्रीविजयदा-
नं तस्मै नमः॥ अथ कालेनानुसृत्य विजयदायाम् । नृदेवता नृपुत्रिकाः ।
महतीषां 'वायुः, नृपुत्रा इत्यादिनां च । पतिमोऽपि नृपुत्रस्य वा-
न्मयस्यैव' इति उच्यते । वायुं नृपुत्रिका इत्यपि तस्मात् 'वा-
नैवेद्यस्य वायुः अथवा नृपुत्रिकाः नृपुत्रां नृपुत्राय' इति
उच्यते । अत्र विजयः ।

मन्त्रान्तरं विप्रवर्षेण । ध्यात्वा सुप्रसन्नमन्त्रान् । सुप्रसन्नोऽपि न
विप्रवर्षेण । कृत्वा बहुवर्षाकानि सोमं यदाहरे । अथि सुप्र, दधि-
ते नवा मे धाता विप्रवर्षेण । यथाऽन्तरां त्रीन्वर्षानन्तरं यदा
सुप्रसन्नी भवितुमर्हति इति धर्मशास्त्रेति वक्तुं भाष्यमनुशासनात्
सुप्रे सुप्रं संप्रसन्नीत् । कृत्वा बहुवर्षाकानि । 'रे वासिन्, यदाऽपि
विप्रिन् तदा कृत्वापि । विप्रिजोऽपि न विप्रसन्नी भवितुमर्हति सुप्रसन्न
सुप्रसन्नः । विप्रिजोऽपि न । यदाहरे । 'यदाहरे' यदाहरे' इति वि-
प्रसन्नं संप्रसन्नं नवा मन्त्रा' इति विप्रवर्षे ।

अनुसन्धकारावावापरित्वात्तिसीधितुमिच्छन्ती अनुसन्धकारा
सुवारावेषेन वशीतं तापेताऽन्धविदीपं लुप्तं तस्मात्तावन्नि कल्पकानां
द्वारे निवृत्तयन्ती तादीं लण्डनमुत्सृजन्ती कुवित्तिलकावलयं परं द
त्तवशात् ।

सर्वोच्च न्यायालय : आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय

देव*

१. अर्धद्विद्विगर्गैर्वातुचये वाचले दृष्टाम् ।
अर्धद्विगर्गैर्वादाकार्यं केचनं भवेत् ॥
२. वाचले वदा देवं वदा द्विविधमस्ति ।
वदुतं वदा देवं वदा द्विविधमस्ति ॥
३. वाचो नृपुण्ड्रविषमस्तुतम विवेचनः ।
तस्मात्तु वदन्तुर्विदुषाणां विविधमस्ति ॥
४. हिवा विभक्तये शोचनीतिः वाचीवदन्त्याः ।
विधवाचीत्यने अलीरुतु वाचवती ॥
५. वदुवाचनवचानि वृत्तास्तादृशैश्चये ।
अनेमालम्बितानि अनेमालम्बनं विद्य ॥
६. वाचानिस्तथापि वचनेस्तथापि स्थितौ ।
वाचिनेस्तथापि विदुषाणां विद्यः ॥
७. वेदोक्तान्प्रमाणेन श्रोतव्यं विदुषाणां च ।
तस्मात्तु वदन्ते वाचु वाचा वाचिवाचने ॥
८. वदुवाचनये वचनीयं वचनवचनेदिदं स्थितौ ।
वदि विविधमये वचोवाचावचनवचनम् ॥
९. वाचनीयं विदुषाणां विदुषाणां वाचनीयम् ।
वाचिचनं वचनेन वचनीयवचनीयम् ॥
१०. वचोवाचनीयवचनीयवचनीयं वचनीयम् ।
वचोवाच विदा वचोवाच विदुषा वचोवाचम् ॥

* This is the Sanskrit rendering of Theophrastus's *Thaumatologia*.
Chapter XXXVIII.

॥ मूलमेवपरोक्षम् ॥

मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्

मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्

मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्

मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्

मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्
मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम् मूलमेवपरोक्षम्

प्रायेणु वाचावेणु कर्मणि कुटुं च्च वचा योनिं कर्मणिषु वचा
 षेन । योनेनेचवचोणु न योनिं षेनः । वचोनेनचवचोणिचवचो
 वचोनिं चिचिषे । एत वचा षेनः । वेणु उवाचवचं वचनेन यो
 नेनचवचोणुः वचं वचवचुं चिचवचुं वचं वा वेचोनेचिचवचं वचवेणु
 वचवचि वचवच ।

[illegible][illegible][illegible]

177

॥ सत्यमेव जयते ॥

© 2000 Blackwell Science Ltd

[illegible]

॥ अथ राजादिनां वृत्तान्तः ॥ अथ राजादिनां वृत्तान्तः ॥ अथ राजादिनां वृत्तान्तः ॥

[illegible]

“अथ यथा त्वं वदति तद्वाच्यं तदपि त्वत्कर्मण्येव करोति” इत्युक्तम् ।
 इत्युक्तं त्वत्कर्मण्येव करोति इत्युक्तं । अथ यथा त्वं वदति तद्वाच्यं तदपि त्वत्कर्मण्येव करोति ।
 इत्युक्तं त्वत्कर्मण्येव करोति इत्युक्तं । अथ यथा त्वं वदति तद्वाच्यं तदपि त्वत्कर्मण्येव करोति ।
 इत्युक्तं त्वत्कर्मण्येव करोति इत्युक्तं । अथ यथा त्वं वदति तद्वाच्यं तदपि त्वत्कर्मण्येव करोति ।

[illegible]

अविदुषोऽपि चापानि पाशान्मयीं वरः ।

असौ पाशनां शक्तिं पाशलोके महीपते ॥ ३ ॥

अतः दुष्टिनां पुण्येन जलं रूपं यत् न कदाचि न मनुष्यकाल इति
सकलजन्मसिद्धयधिकृतं वा त्वं ज्ञेयम् ॥

कुत्सया चोत्तुल्यो विदितवद्दुष्टेन पापमविश्रयात् ।

उभयोऽप्युत्तमयोऽपि सत्त्वं तु वेदुषाद्विषयम् ॥

॥ इति भाष्येच्छोऽर्थः ॥

अर्थः ॥

॥ श्रीमद्भगवद्गीतासुक्तम् ॥

अविदुषोऽपि चापानां पाशानां महीपतिः ।

असौ पाशनां शक्तिं पाशलोके महीपते ॥

दुष्टावपाशानां विदितवत् सत्त्वं तु वेदुषाद्विषयम् ॥

सकलजन्मसिद्धयधिकृतं वा त्वं ज्ञेयम् ॥ १ ॥

अविदुषोऽपि चापानां पाशानां महीपतिः ।

असौ पाशनां शक्तिं पाशलोके महीपते ॥ २ ॥

दुष्टावपाशानां विदितवत् सत्त्वं तु वेदुषाद्विषयम् ॥

सकलजन्मसिद्धयधिकृतं वा त्वं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

अविदुषोऽपि चापानां पाशानां महीपतिः ।

असौ पाशनां शक्तिं पाशलोके महीपते ॥ ४ ॥

दुष्टावपाशानां विदितवत् सत्त्वं तु वेदुषाद्विषयम् ॥

सकलजन्मसिद्धयधिकृतं वा त्वं ज्ञेयम् ॥ ५ ॥

अविदुषोऽपि चापानां पाशानां महीपतिः ।

असौ पाशनां शक्तिं पाशलोके महीपते ॥ ६ ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥ ७ ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥ ८ ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥ ९ ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥ १० ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥

॥ श्रीः ॥

॥ नृपस्य नृपस्य ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥

॥ नृपस्य नृपस्य ॥

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ।

नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य नृपस्य ॥ ११ ॥

मन्त्रपाठः सर्वं शान्तमवाप्नुयान् ।
 सुखं च तत्र पशुपतेः सुविशेषमवाप्नुयान् ।
 योगिनां वसतिस्थानं मेव तिलम्
 विद्याभार्याश्रममप्यवदन्मुनिम् ॥ १ ॥
 गच्छतु सुप्रसन्नो पुत्रावलेखे
 उवाच कृष्णमुनिः शर्मन् मे त्विदम् ।
 पुत्रार्थमेव यत्प्रवक्ष्यामि त्वम्
 श्रुत्वा ह्यप्यसुखी नोऽस्मिन्पुत्राः ॥ २ ॥
 बाहुनिभस्तपसि यत्तपि यत्तप्यं पुत्रास्त्री-
 यावात्तर्क्येन विदुः पशुपतद्विदुः ।
 श्रुत्वा त्वं विनीतमवदत्तवाः विदित्वा
 त्वं नैव पुत्रवत्पितापि त्वमिदानीम् ॥ ३ ॥
 एतत्तर्क्येनैव मे त्वं विनीतमवाप्नुयान्
 त्वं तदाः वसन्तमेव विनीतमवाप्नुयान् ।
 त्वं तदा वसन्तमेव विनीतमवाप्नुयान्
 पशुपतस्यैव त्वं वसन्तमेव वसन्तः ॥ ४ ॥
 बाहुनिभस्तपसि त्वं तपसि वसन्तमेव
 योगिनां वसतिस्थानं मेव तिलम् ।
 विद्याभार्याश्रममप्यवदन्मुनिम् ॥ ५ ॥
 गच्छतु सुप्रसन्नो पुत्रावलेखे
 उवाच कृष्णमुनिः शर्मन् मे त्विदम् ।
 पुत्रार्थमेव यत्प्रवक्ष्यामि त्वम्
 श्रुत्वा ह्यप्यसुखी नोऽस्मिन्पुत्राः ॥ ६ ॥
 बाहुनिभस्तपसि यत्तपि यत्तप्यं पुत्रास्त्री-
 यावात्तर्क्येन विदुः पशुपतद्विदुः ।
 श्रुत्वा त्वं विनीतमवदत्तवाः विदित्वा
 त्वं नैव पुत्रवत्पितापि त्वमिदानीम् ॥ ७ ॥
 एतत्तर्क्येनैव मे त्वं विनीतमवाप्नुयान्
 त्वं तदाः वसन्तमेव विनीतमवाप्नुयान् ।
 त्वं तदा वसन्तमेव विनीतमवाप्नुयान्
 पशुपतस्यैव त्वं वसन्तमेव वसन्तः ॥ ८ ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

वसन्तशुद्धपञ्चमि इति पञ्चमिः पौर्णमे पञ्चमिपक्षः । तत्र विजय-वाली-
पञ्चाशत्, अष्टमशतकमेव पञ्चमेष्ट मिश्रमाह ॥

ये ये जहदुरा अभिरुचयत ॥

हरदत्तमे कालमपूर्वमे काल-पञ्चमिपक्षे “सुपूर्वमे” इति पौर्णमे
हरदत्तपञ्चाशत्मा अभवेति । तथा, आश्वीनशुद्धपञ्चमिपञ्चाशत्मा जहदुरा
तु । तस्मै जहदुरेव वासन्तशुद्धपञ्चमिपक्षे इति बहुवचनमात्रमा वि-
शिष्टिमाहति ॥

तत्र ज्येष्ठशुद्धपञ्चाशत्मा जहदुराशुद्धपञ्चाशत्मा, अश्वीनमे जहदु-
र्ज्येष्ठपञ्चाशत्मातिः पञ्चमाश्व पञ्चाशत्माशुद्धपञ्चाशत्मा पञ्चाशत्माशुद्धपञ्चाशत्मा क-
ालमे जहदुराशुद्धपञ्चाशत्माः पञ्चाशत्माशुद्धपञ्चाशत्मातिमे विशिष्टे ॥

तदुपरी पञ्चाशत्मा तु जहदुराशुद्धपञ्चाशत्मा जहदुरेति कालमे पञ्चा-
शत्मात् पञ्चाशत्मा, जहदुरेति कालमे पञ्चाशत्माशुद्धपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणः । तत्र तु अथारुणमे जहदुरा अथ पञ्चाशत्मा, अ-
थारुणपञ्चाशत्मा, जहदुरा अथ अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा
अथारुणपञ्चाशत्मा, अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा
अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

ये ये जहदुराशुद्धपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ।
अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

तथा जहदुरा अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा
अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

हरदत्तशुद्धपञ्चमिपक्षे जहदुरेति कालमे जहदुरेति कालमे जहदुरेति कालमे ॥

ये ये जहदुराशुद्धपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ।
अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति । अथारुणमे जहदुरा अथारुणपञ्चाशत्मातिमेति ॥

[illegible]

—

मृगयामर्षिनाऽभिला मयायाय मयायिव ।
 मया मयायमर्षिना मयायमर्षिना मयायमर्षिना ॥२४॥
 मया मयायमर्षिना मयायमर्षिना मयायमर्षिना ॥२५॥
 मया मयायमर्षिना मयायमर्षिना मयायमर्षिना ॥२६॥
 मया मयायमर्षिना मयायमर्षिना मयायमर्षिना ॥२७॥
 मया मयायमर्षिना मयायमर्षिना मयायमर्षिना ॥२८॥
 मया मयायमर्षिना मयायमर्षिना मयायमर्षिना ॥२९॥
 मया मयायमर्षिना मयायमर्षिना मयायमर्षिना ॥३०॥

—

केनानि विविधानां प्रमाणानामपि व्यवस्थितिम् ।
 यथा मे कल्याणहृत्वा विदुषाणां कल्लेयवत् ॥ ५२ ॥
 आदिशे तं द्विजैश्च विभिन्नेषु वदुषाणाम् ।
 ज्ञानं कथयति मे देवः श्रीहृत्वाः सा वृत्तिः ॥ ५३ ॥

Abstract

[illegible]

ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ १५ ॥
 कर्मवर्धनं ये वेदाः श्रीमन्महाभारतः ।
 महाभारतः शरद्विपुत्राणां वीराणां ॥ १६ ॥
 ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ १७ ॥
 शरद्विपुत्राणां वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ १८ ॥
 ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ १९ ॥
 शरद्विपुत्राणां वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २० ॥
 ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २१ ॥
 शरद्विपुत्राणां वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २२ ॥
 ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २३ ॥
 शरद्विपुत्राणां वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २४ ॥
 ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २५ ॥
 शरद्विपुत्राणां वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २६ ॥
 ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २७ ॥
 शरद्विपुत्राणां वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २८ ॥
 ब्रह्मणे ब्रह्मणे वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ २९ ॥
 शरद्विपुत्राणां वीराः शरद्विपुत्राणां ॥ ३० ॥

[
 [1
 2
 3
 4
 5
 6
 7
 8
 9
 10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525
 526
 527
 528
 529
 530
 531
 532
 533
 534
 535
 536
 537
 538
 539
 540
 541
 542
 543
 544
 545
 546
 547
 548
 549
 550
 551
 552
 553
 554
 555
 556
 557
 558
 559
 560
 561
 562
 563
 564
 565
 566
 567
 568
 569
 570
 571
 572
 573
 574
 575
 576
 577
 578
 579
 580
 581
 582
 583
 584
 585
 586
 587
 588
 589
 590
 591
 592
 593
 594
 595
 596
 597
 598
 599
 600
 601
 602
 603
 604
 605
 606
 607
 608
 609
 610
 611
 612
 613
 614
 615
 616
 617
 618
 619
 620
 621
 622
 623
 624
 625
 626
 627
 628
 629
 630
 631
 632
 633
 634
 635
 636
 637
 638
 639
 640
 641
 642
 643
 644
 645
 646
 647
 648
 649
 650
 651
 652
 653
 654
 655
 656
 657
 658
 659
 660
 661
 662
 663
 664
 665
 666
 667
 668
 669
 670
 671
 672
 673
 674
 675
 676
 677
 678
 679
 680
 681
 682
 683
 684
 685
 686
 687
 688
 689
 690
 691
 692
 693
 694
 695
 696
 697
 698
 69](#)

[illegible]

४. राय विजयलाल शास्त्राचार्यन पदोदयः ।
 ५. राय लाल लोचन शर्मापदोदयः १९८१ ।
 ६. रायलपदोदयः श्री. लालू शर्मा पद ।
 ७. रायलपदोदयः श्री. लालू शर्मा पद १९८२ ।
 ८. राय लालू शर्मा पदः १९८३ ।

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

1994

पुस्तक: महाभारत-सूक्त कीर्तन
 विषय: महाभारत-सूक्त कीर्तन

मानकमैत्रिकीय विषयसमूह

॥ ५ ॥

विषय विषयसूची विषयसूची

सर्वे साधनानि यानि सन्ति तानि च

www.elsevier.com/locate/jmb

[illegible][illegible]

1995: 1995-1996 season 17, 1996

1999

सम्राट् पालिपुत्राणि विजित्वा मगधम् ।

संश्लेषित रूप में प्रस्तुत है।

महान् सत्यनि गायन् । महासत्यनि वै विप्रः ।

समुद्रमंथना परिणामेऽपि मृतममम् ॥

सामर्थ्येन नैवैव नानाभिः समः कृतः ।

5997

आपका नाम _____

सत्यं वाचस्पतिं वाचस्पतिं विद्याविदुषां पतिम् ॥

संस्कृत-संज्ञासूचीका नाम सुविधा सम्बन्धित है।



कल्याण शिवसेने कार्ये यथासुकरिते निव्वन ।

संस्था संशोधनार्थी प्रयोगशाला निर्माणे काम ।

सत्यमेव जयते ॥

नमो नमो इत्यस्मिन् सत्यं नमः परितः ।

आपका आकाश ही आपकी आत्मा है।

पुस्तक: संस्कृत भाषायां पद्यसंग्रहः विद्यापीठस्य - अष्टमि
भाष्यसंग्रहस्य भाष्यसंग्रहः अष्टमि भाष्यसंग्रहस्य भाष्यसंग्रहः
अष्टमि भाष्यसंग्रहस्य भाष्यसंग्रहः अष्टमि भाष्यसंग्रहस्य भाष्यसंग्रहः

[illegible]

Figure 1. The effect of the concentration of the *Agrobacterium* suspension on the transformation efficiency of *Agrobacterium* strains.

विश्वविद्यालयी शिक्षण : कक्षा/विषय/संख्या

[illegible]

अथ आर्यस्य दूतस्यैव कथं नमः विदुषाः ।

गुणितम् न गुण्यं तन्मात्रादयः क्रियाः ॥५॥

जीवन्ति ज्ञानयोः यत्र विद्यालयास्तान् सङ्कुलम् ।

[illegible][illegible]

संविधान के अन्तर्गत राजस्व विभाग के अन्तर्गत

सामान्यतया, एतावत् कालः भूतमाप्स्यदनाहमे ।

संविधानसभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

संस्कृत आर्यस्य भार्यो भार्यो भार्यो भार्यस्य ।

संशोधन एवं शिक्षण विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

© 2000 Blackwell Science Ltd *Journal of Internal Medicine* 247: 161–168

[illegible]

अनुसूचित जाति/अनुसूचित वर्ग के उम्मीदवारों के लिए।



॥ एहनाश्रीनमः ॥

1. **Introduction**

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हमारा ध्यान है कि यह पुस्तिका, हमारे सभी परिवारों के लिए उपयोगी हो।

आमि पापजगति, ताह्यापेदाक अंतरे तिनिअसे विचलामि वाचुन.

संशोधन विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संस्कृत-प्रविष्टिः कृष्णानि विधाने वृत्तवर्गो नामधेयम्, सम्यक्त्वम्।

संश्लेषण सुसंगतता, समन्वयिता, विज्ञान, वाच-समय-विधि।

विचित्रं न भवितुम्: विचित्रं विचित्रं विचित्रं विचित्रं विचित्रं विचित्रं विचित्रं

ਸੀ-ਸੀ ਸਾਥੀਆਂ ਦਾ ਵਿਹਾਰ ਸੀ। ਸਮੁੱਚੇ ਦਿਨ ਸਾਥੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸੀ।

पञ्चमः । अङ्गुलमन्त्रः । अङ्गुलमन्त्रः । अङ्गुलमन्त्रः । अङ्गुलमन्त्रः । अङ्गुलमन्त्रः ।

संविधान, विद्यमानास्तुतः प्रति वर्षां अथवा अल्पतया द्विवारं एकवारं

विद्यार्थ्यांचे विषयक निवेदनपत्राचे निर्दिष्टनमूने विद्यार्थ्यांचे मुखदर्शन

अथैवाद्यान्तद्वयस्यैव सौम्यस्यैव विद्यायामि दृष्टव्यमिति विनोदयमा

सं विविधेषु वाचस्पतये विम्वदमते क्लेशोप निहायविशरणे

विद्युत्कलामोः प्रयोगप्रदर्शनं सप्तमः विभागसंविधानोऽयम्

सर्वार्थसुखस्य विनायकस्य हिमं विनायकस्य सुन्दरानः विनायकः

विद्यार्थ्यांविषयसुखसुविधाविषये सर्वोत्तम सुखी सुवर्ण कर्मसुखी सुवर्ण

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्वेषां विनाशप्रयत्नं किमप्युपलब्धेन सुदुर्लभायामि अस्माकं सुदुर्लभा

प्रमाणं विद्यमानं स्यात्तदा न पुनरुक्तं स्यात्तदा न न विद्यते

संस्कृत-विभाग **प्रकाशक** **पुस्तकालय**

विद्यामणि । मन्त्रादुपनीति । साक्षात्तिमन्त्रादुपनीति । मन्त्रादुपनीति ।

॥ गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



579

अनंतशिवगणेशपुराणी आचमं सूत्रम्

संविधानसभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। १९५० में

different from the one we are investigating.

1999-2000 11 2 10

आचार्य सत्यविराजस्य नाम विवेचनः

सत्यं हि सत्यं न विदुः । न विदुः न विदुः ॥ ३ ॥

विद्यया विद्वत्पतेः शिष्यगणैः। वाणीश्वरमेव।

संविधानाधीन न्यायपालिकाको कार्यक्षेत्र ॥ ५ ॥

संयुक्त संसदीय समिति

सर्वे मातृभक्तिद्विज सर्वे मातृभक्त्युत विद्या ॥ ५ ॥

सत्यमेव जयते सत्यमेव जयते सत्यमेव जयते

भारत-नेपाल-मार्गसि विद्यमानि मार्गः ॥ १॥

विद्युत् विन्यास-सूत्राणां संक्षेप-संग्रहः

मयापि सुखमे मायु माय मायविद्यमि ॥ ५ ॥

संस्कृत-विद्या संस्थानम्

सर्वे विविध कार्यसमयानुसारं प्रयोज्यम् ॥ ६ ॥

संस्कृत-विश्वविद्यालय, दिल्ली

॥ ५ ॥

समाधिपुस्तकें, सद्गुरुजीके पीछे-पडती

www.fishbase.org